RESEARCH REVIEW JOURNALS
RCTRM-2018
OCT- 2018
Special Issue

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

शुद्ध शास्त्रीय ठुमरियों का चित्रपट में प्रयोग

रीमा शर्मा

रिसर्च स्कॉलर, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 20 Oct 2018

Keywords
सुमधुर, श्रृंगारात्मक परम्परागत ठुमरियां,

ABSTRACT

उपशास्त्रीय संगीत की लोकप्रिय गायन विधाओं में ठुमरी को सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है क्योंकि स्वर एवं ताल युक्त गीत के बोलों की सुमधुर, श्रृंगारात्मक एवं भावपूर्ण अभिव्यक्ति में यह गायकी पूर्णतः सक्षम है। जिस प्रकार एक नर्तक विभिन्न मुद्राओं और भावभंगिमाओं द्वारा कथा को श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत करता है। उसी प्रकार ठुमरी गायक मुर्की, कण, खटका, पुकार इत्यादि विशिष्ट गमक प्रकारों द्वारा गीत के बोलों को अलंकृत करते हुए गीत में निहित भावों की अभिव्यंजना करता है। ठुमरी के बोल ही इसकी आत्मा है इसलिए इसमें स्वरों के कलात्मक एवं चमत्कारिक प्रदर्शन को कम महत्व देकर बोलों के भावात्मक प्रदर्शन को प्रबल रखा जाता है। इसकी सरल धुन एवं काव्य की स्पष्ट अभिव्यक्ति को साधारण संगीत प्रेमी भी ग्रहण कर लेता है, इसलिए इसको शास्त्रीय संगीत रसिकों के साथ–साथ जनसाधारण से भी स्नेह प्राप्त हुआ है। ठुमरी के इन्हीं विशेष गुणों से प्रभावित होकर चित्रपट संगीत में भी इसको समय–समय पर शामिल किया गया है। ठुमरी के चलचित्र संगीत में प्रवेश करते ही जनसाधारण भी इसकी ओर आकर्षित होने लगा। चलचित्र संगीत की प्रारम्भिक समय से लेकर वर्तमान समय तक की यात्रा का अध्ययन करें तो ज्ञात होता है कि ऐसे बेशुमार गीत है जिनकी रचना ठुमरी के आधार पर की गई और उनमें से काफी गीत जनसाधारण में बेहद लोकप्रिय भी हुए। चूंकि फिल्म संगीत में शब्दों एवं भावों की अभिव्यक्ति पर ध्यान विशेष रूप से केन्द्रित रहता है तथा कलाकारी की गुंजांइश कम रखी जाती है इसलिए शायद शास्त्रीय संगीत की शेष विधाओं की तुलना में ठुमरी विधा का चित्रपट में अधिक प्रचलन रहा है। अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि ठुमरी गायन को चित्रपट संगीत में प्रमुखतः तीन प्रकार से प्रयोग किया गया है। पहला शुद्ध अर्थात परम्परागत ठुमरियां, दूसरा परम्परागत शास्त्रीय ठुमरियों की धुन, रचना शैली एवं काव्य के आधार पर चित्रपट की ठुमरियां तथा तीसरा ठुमरीनुमा गीत। जैसा कि ठुमरी के इतिहास से ज्ञात होता है कि ठुमरी का प्रारम्भिक प्रयोग कथक नृत्य के साथ किया जाता था। अतः इसका प्रचलन अधिकतर तवायफों के कोठों पर होता था, जो नृत्याभिनय के साथ भावपूर्ण ढंग से ठुमरी का प्रस्तुतिकरण करती थी। अतः चित्रपटों में भी जब–जब संगीत निर्देशकों को कहानी में ऐसी परिस्थितियां मिली तो उन्होंने ठुमरी गायन विधा का निःसंकोच प्रयोग किया। बाद में धीरे–धीरे श्रृंगार रस के संयोग एवं वियोग पक्ष पर आधारित गीतों के लिए भी ठुमरी एवं ठुमरीनुमा गीतों की रचना चित्रपटों में की जाने लगी। जनसाधारण ने ठुमरी के प्रत्येक रूप में किए गए प्रयोग को सराहा है। साथ ही ठुमरी गायन विधा ने संगीत रसिकों को अपने जादुई प्रभाव से मंत्र–मुग्ध किया है।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देष्य उन प्रसिद्ध परम्परागत शास्त्रीय ठुमरियों की चर्चा करना है जिनका प्रयोग चित्रपट संगीत में शास्त्रीयता के साथ किया गया है।

भूमिका

'सौंदर्य अनंत है और उसकी अभिव्यक्ति के साधन भी अनंत है। सौंदर्य–बोध से प्राप्त होने वाला आनंद भी अनंत है' (बृहस्पति आचार्य, 2012)। मनुष्य स्वभाव से ही सौंदर्य से प्रभावित रहा है। सौंदर्य से प्राप्त होने वाले आनंद की प्राप्ति के लिए सदैव प्रयत्नषील भी रहा है, जिसके फलस्वरूप विभिन्न कलाओं का जन्म एवं विकास हुआ, जिनमें संगीत कला का स्थान सर्वोपरि है। संगीत का लक्ष्य मानव मन की भावनाओं को मधुरता से व्यक्त करना ही नहीं है अपितु उसे सांसारिक चिंताओं से मुक्त कराकर दिव्य आनंद की अनुभूति कराना भी है। श्रुति प्रिय होने के कारण संगीत में मानव मन एवं मस्तिष्क को आकर्षित एवं प्रभावित करने की अदम्य क्षमता है। वैसे तो हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की समस्त विधाएं स्वर एवं ताल के सहयोग से गीत के बोलों की सुंदर एवं भावप्रद प्रस्तुति द्वारा संगीत रसिकों को भाव विभोर एवं रसमग्न करने में सक्षम है। परंतु भावों का मधुर, सौंदर्यपूर्ण एवं श्रृंगारात्मक, संगीतमयी चित्रण करने में ठुमरी गायन विधा को उत्कृष्ट स्थान प्राप्त है। 'ठुमरी में 'मिलन' और 'बिरहा' को समाविष्ट करने वाला 'प्रेम', 'वात्सल्यता', 'कोमलता' और 'भक्तिभाव' का समावेष होता है' (विमल डॉ. 2010)।

ठुमरी की रचना श्रृंगार रस प्रधान होने के कारण इसलिए इस के गीत प्रेम भावना से ओतप्रोत होते हैं। इसमें श्रृंगार रस के संयोग एवं वियोग दोनों पक्षों का चित्रण बड़ी खूबसूरती से किया जाता है। ठुमरी के इतिहास को देखते हुए यह समझ में आता है कि ठुमरी गायन का उपयोग ज्यादातर मनोरंजन के लिए किया गया। नृत्य गीत होने के कारण ठुमरी की भावाभिव्यक्ति कथक नृत्य द्वारा की जाती थी। परन्तु कालांतर में ठुमरी के भावों को गायक कलाकार स्वयं ही स्वरों एवं बोलों के सहयोग से अभिव्यक्त करने लगे। ठुमरी में गायक राग के कड़े नियमों में बंधे बिना अपनी कल्पना की उड़ान भरने में स्वतंत्र होता है। गीत रचना को प्रभावषाली एवं आकर्षक बनाने हेतु मुर्की, खटका, कण, जमजमा, मींड, पुकार

का प्रयोग प्रमुख तौर पर किया जाता है। परन्तु इनका प्रयोग इस प्रकार से किया जाता है कि शब्दों के अर्थों का अनर्थ न हो एवं शब्दों के भाव स्पष्ट रूप से प्रदर्षित हो सके। छोटे–छोटे बोलालाप, तानों एवं सरगमों का भी प्रयोग किया जाता है। ठुमरी के इन्हीं गुणों के कारण इस विधा को हिन्दी चित्रपट संगीत में विशेष स्थान प्राप्त हुआ है। ठुमरी में समा गई कोमल भावना, नृत्य, अभिनय, आकर्षक धुनों, ओजस्वी ताल–लय और लोकप्रियता आदि गुणों को ध्यान में रखते हुए चित्रपटों में इसका समावेष किया गया क्योंकि गीत के इस अंग की चित्रपटों में नितांत आवश्यकता थी (विमल डॉ. 2010)।

'सौंदर्य वही है जहां प्रतिक्षण नवीनता हो। नदी वही होती है, परंतु उसमें प्रतिक्षण मचलती हुई लहरिया नव–नव होती है। इसलिए सहृदय का मन उनमें सदा रमता है' (बृहस्पति आचार्य, 2010)। वास्तव में चित्रपट संगीत का क्षेत्र बेहद विशाल है क्योंकि इसकी रचना शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, लोक एवं पाष्चात्य संगीत की विधाओं के आधार पर होती रही है। इसका प्रमुख कारण यह है कि चित्रपट संगीत निर्देशक अपने श्रोताओं एवं संगीत रसिकों को कुछ नवीन संगीत प्रदान करने के लिए सदैव प्रयत्नषील रहते हैं। चित्रपट संगीत अपने प्रारंभिक काल में शास्त्रीय एवं लोक संगीत पर आधारित रहा है। 'चूंकि फिल्म संगीत का उद्देष्य सदा से जन रुचि के अनुकूल चलना रहा है, इसलिए उस समय लोगों की रुचि भी शास्त्रीय संगीत के स्वरों को समझने में सक्षम थी। संगीत का एक वातावरण था अतः इन संगीत निर्देशकों ने लोगों की रुचि को ध्यान में रखते हुए ऐसे गीतों का सृजन किया, जिनका आधार पूर्णतः शास्त्रीय संगीत था। इन गीतों में नवीनता भरने के लिए 'बैकग्राउंड म्यूजिक' का सहारा लिया गया, जिसमें ढोलक, घड़ा, हारमोनियम, मंजीरा जैसे प्रचलित वाद्यों के साथ 'हवाईन गिटार' का भी प्रयोग किया गया (जौहरी डॉ. सीमा 2001)। संगीत में शास्त्रीय संगीत का यह रूप जनसाधारण के मन को अधिक भाया। इसलिए संगीत निर्देशकों ने जहां शास्त्रीय संगीत के रागों में तालों का प्रयोग फिल्म संगीत में किया वहीं शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत की विभिन्न विधाओं को भी शामिल किया। इसी में ठुमरी गायन विधा का फिल्म संगीत में प्रचलन बेहद जनप्रिय हुआ है। पहले चित्रपटों में कहीं ना कहीं मुजरे का स्थान होता था और जब मुजरा हुआ तो ठुमरी का स्थान अपने आप बन गया। अतः इस सुंदर विधा ने चित्रपट संगीत के प्रारंभिक युग से ही अपना स्थान बना लिया और बड़े इतिहास की रचना की (विमल डॉ. 2010)।'

यहाँ पर हम कुछ प्रसिद्ध परम्परागत ठुमरियों की चर्चा करेंगे, जिनका प्रयोग चित्रपट में हुआ और उनमें से कुछ ठुमरियों को जनसाधारण ने काफी सराहा। इनमें से कुछ ठुमरियों का प्रयोग प्रत्यक्ष एवं पूर्ण रूप से हुआ और कुछ ठुमरियों को आंशिक रूप में। चित्रपट की पृष्ठभूमि में दृष्य को प्रभावशाली बनाने हेतु प्रयोग किया गया। चित्रपट संगीत में वैसे तो परम्परागत ठुमरियों का काफी मात्रा में प्रयोग किया गया है, उन सब ठुमरियों की चर्चा एक ही शोध–पत्र में करना सम्भव नहीं इसलिए कुछ विशिष्ट ठुमरियों का वर्णन ही इस शोध–पत्र में किया जा रहा है, जो कि निम्न प्रकार से हैं–

पिया बिन नाहि आवत चैन

किराना घराना के संस्थापक उ0 अब्दुल करीम खाँ द्वारा रचित एक प्रसिद्ध ठुमरी है, जो कि राग झिंझोटी पर आधारित है। मध्य लय की इस ठुमरी के भावमयी गायन द्वारा उ0 अब्दुल करीम खाँ ने सदैव संगीत रसिकों को आनन्द विभोर कर खूब प्रषंसा प्राप्त की। श्रृंगार रस के वियोग पक्ष की सफल अभिव्यंजना, उत्तम काव्य एवं धुन रचना शैली के कारण यह ठुमरी सदैव उत्कृष्ट शास्त्रीय गायकों के आकर्षण का केंद्र रही हैं। इस ठुमरी की प्रभावशाली धुन एवं लोकप्रियता को देखते हुए इसे चित्रपट संगीत के प्रारम्भिक दौर 1935 में 'देवदास' चित्रपट के लिए इस्तेमाल किया गया। फिल्म में इस ठुमरी का गायन 'के.एल. सहगल' ने 'तिमिर बरन' के निर्देषन तले किया। एक तरफ जहाँ इस ठुमरी के गायन द्वारा के.एल. सहगल को जनसाधारण एवं रसिकों से बेहद स्नेह मिला वहीं उ0 अब्दुल करीम खाँ से काफी प्रषंसा प्राप्त हुई। कहा जाता है कि के.एल. सहगल की आवाज़ में इस ठुमरी को सुनकर स्वयं खाँ साहब भी जज़्बाती हो गयें एवं उन्होंने के.एल. सहगल को गले लगाकर एक सफल गायक बनने का आशीर्वाद भी दिया। आगे चलकर इसी ठुमरी को पं0 भीमसेन जोशी एवं लक्ष्मी शंकर ने चित्रपट 'पतिव्रता' के लिए मधुर आवाज़ में गाकर संगीत रसिकों को उदात वातावरण उपलब्ध कराया।

बाबुल मोरा नैहर छूटो ही जाए

लगभग 80 वर्ष पुराना, चित्रपट संगीत के प्रारम्भिक दौर का यह प्रसिद्ध गीत, आज भी जनसाधारण के स्मृति पटल पर छाया हुआ है। इसे कई चित्रपटों में शामिल किया गया है, वास्तव में यह 'नवाब वाज़िद अली शाह' द्वारा रचित राग भैरवी में एक प्रसिद्ध ठुमरी है जिसे उपशास्त्रीय संगीत जगत में 'क्वीन ऑफ ठुमरीज़' के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के उत्कृष्ट एवं विख्यात गायक–वादक कलाकारों उ0 बड़े गुलाम अली खाँ, बिस्मिल्ला खाँ, पं0 भीमसेन जोषी, उ0 फैयाज़ खाँ, गौहर जान, मलिका जान, सिद्धेश्वरी देवी, किशोरी अमोनकर, गिरिजा देवी इत्यादि की मनपसंद ठुमरी रही है। कारण यह कि जब–जब भी संगीत समारोहों एवं महफिलों में इस ठुमरी का गायन प्रस्तुत किया गया है तो जनसाधारण ने प्रत्येक बार इसका भरपूर आनन्द उठाया है। भैरवी की प्रसिद्ध ठुमरी में जहाँ एक ओर विवाहोपरान्त नवविवाहिता वधु के पितृगृह से बिछुड़ने और चार कहारों द्वारा उठाई जाने वाली डोली में बैठकर पतिगृह को प्रयाण करने का वर्णन किया गया है, वहाँ दूसरी ओर इसके गूढ़ार्थ द्वारा मृत्यु के पश्चात् मनुष्य की आत्मा के संसार से बिछुड़ने, चार व्यक्तियों के कंधों पर रखी अर्थी द्वारा शव की शमशान यात्रा और आत्मा के परमात्मा से मिलने की अभिव्यक्ति भी है। (डॉ0 शत्रुघ्न शुक्ल,1983)

इस ठुमरी की हृदय स्पर्शी धुन रचना एवं काव्य के कारण चित्रपट संगीत में भी इसे सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त हुआ है। संगीत रसिकों पर इसके जादुई प्रभाव को देखते हुए इस ठुमरी को सर्वप्रथम संगीत निर्देशक आर.सी. बोराल ने के.एल. सहगल से चित्रपट 'स्ट्रीट सिंगर' के लिए 1938 में गवाया। मन को भावनाओं की नदी में बहा देने वाली इस ठुमरी का प्रयोग चित्रपट में केवल एक बार ही नहीं बल्कि बार–बार किया गया है।

1973 में इसे सुप्रसिद्ध गज़ल गायक जगजीत सिंह एवं चित्रा ने 'आविष्कार' चित्रपट के लिए परम्परागत रूप में ही गाया। फिर 2006 में 'बाबुल' फिल्म और 2017 में 'पूरन' फिल्म के लिए क्रमवार रिचा शर्मा और वर्तमान समय के लोकप्रिय युवा गायक अरिजीत सिंह ने भावपूर्ण ढंग से इस ठुमरी का गायन किया है, परन्तु इस बार नवीनीकरण हेतु इसकी धुन में कुछ परिवर्तन किया गया है।

बाट चलत नई चुनरी रंग डाली

राग भैरव में रचित इस बंदिश की ठुमरी का प्रयोग चित्रपट 'रानी रूपमती' 1951 के लिए किया गया। इस ठुमरी को श्रृंगार एवं भक्ति रस भाव से प्रतिष्ठित शास्त्रीय गायक कृष्णराव चौंकर एवं पार्श्व गायक मुहम्मद रफी से जुगलबन्दी रूप में श्रीनाथ त्रिपाठी के संगीत निर्देशन में गवाया गया। मध्य लय में इसे प्रारम्भ करके इस ठुमरी को द्रुत लय में पहुँचा करके ख्याल की भाँति छोटी–छोटी तानों द्वारा अलंकृत कर खूबसूरत ढंग से समाप्ति की गई। वास्तव में उत्तर भारत में परम्परागत संगीतजीवी गायक–गायिकाओं द्वारा गाए जाने वाले होली पर्व से संबद्ध गीतों में से धमार ताल बद्ध होरी को छोड़कर होली नाम से गाए जाने वाले गीतों की रचना व गान शैली ठुमरी जैसी होने के कारण इन्हें ठुमरी–गीत भेद के अन्तर्गत ही माना जाता है। अतः इस विधि से गाई जाने वाली होरी रचनाओं को होली क्रीड़ा–वर्णन युक्त ठुमरी ही समझना चाहिए। (डॉ0 शत्रुघ्न शुक्ल, 1983,) राग भैरवी में रचित प्रस्तुत बंदिश की ठुमरी भी होली पर आधारित है। इसमें भगवान कृष्ण की लीला का वर्णन है। इस ठुमरी की खूबसूरती के कारण 1953 में चित्रपट 'लड़की' के लिए भी इस ठुमरी का इस्तेमाल किया गया। इस बार इसे पार्श्व गायिका गीता दत्त ने संगीत निर्देशक सुदर्शन एवं धनीराम के निर्देशन में मध्य लय में गाया तथा गीत के अंत में कुछ लय बढ़ाकर तान लेते हुए तिहाई लगाकर इस ठुमरी की समाप्ति की। गीता दत्त की मखमली एवं भावपूर्ण आवाज़ में ठुमरी ने जनसाधारण को आनन्दित किया है।

सजन तुम काहे को नेहा लगाए

राग तिलंग में रचित इस ठुमरी को हिन्दुस्तानी शास्त्रीय एवं उपषास्त्रीय गायक इंदुबाला, पं0 भीमसेन जोषी इत्यादि ने गाया है। इसी ठुमरी को चित्रपट 'जासूस' 1957 के लिए बहुमुखी प्रतिभा की स्वामी चित्रपट पार्श्व गायिका आषा भोंसले ने अपनी सोजपूर्ण एवं दर्द भरी आवाज़ में गाया। इस ठुमरी की धुन रचना करुण एवं मार्मिक होने के कारण गायकों के लिए श्रृंगार रस के वियोग पक्ष को चित्रित करना सरल हो जाता है।

प्रेम जोगन बन के

1960 में 'मुगले आज़म' चित्रपट के लिए उ0 बड़े गुलाम अली खाँ साहब ने इस ठुमरी को राग सोहनी में गाया है। इस सम्बन्ध में एक रोमांचक वाक्या सुनने को मिलता है कि इस फिल्म में तानसेन के किरदार के लिए उ0 बड़े गुलाम अली को राज़ी करने का प्रयास पहले संगीत निर्देषक नौषाद अली ने किया। परन्तु नौषाद अली को स्पष्ट रूप से मना करने के उपरान्त जब फिल्म के निर्माता एवं निर्देषक के. आसिफ ने ज़ोर देकर कहा तो उन्होंने प्रत्येक गीत के 25000 रुपये की राषि की माँग रखी ताकि वह स्वयं ही पीछे हट जाए। परन्तु आसिफ साहब ने उनके प्रस्ताव को मान लिया और उस्ताद जी ने उस चित्रपट में अपनी रचित ठुमरी 'प्रेम जोगन बन के' गाई।

कौन गली गये श्याम

राग खमाज में रचित सुप्रसिद्ध परम्परागत ठुमरी का प्रयोग कई चित्रपटों में किया गया। परन्तु शुद्ध एवं परम्परागत ढंग से इसका गायन 1972 की 'पाकीज़ा' चित्रपट में किया गया। इस चित्रपट के लिए इस ठुमरी को सुर साम्राज्ञी बेगम परवीन सुलताना ने अपने स्वरों से सजाया। तवायफ के कोठे के दृष्य को और प्रभावषाली बनाने हेतु इस ठुमरी का चित्रपट में पृष्ठभूमि में प्रयोग किया गया। बेगम परवीन सुलताना ने इसे मुर्की, कण, खटका इत्यादि विषिष्ट गमक प्रकारों से अलंकृत कर भावपूर्ण ढंग से नज़ाकत भरी आवाज़ में गाया। परन्तु इस ठुमरी का कुछ ही भाग चित्रपट में सुनने को मिलता है जो कि बहुत निराषाजनक है। संगीत रसिक इस ठुमरी का पूरा आनन्द इस चित्रपट में नहीं ले पाते हैं।

कान्हा मैं तोसे हारी

कथक नृत्य के लखनऊ घराने के संस्थापक बिंदादीन महाराज द्वारा रचित राग भैरवी में खूबसूरत ठुमरी है। जिसे 1977 में चित्रपट 'षतरंज के खिलाड़ी' के लिए पं0 बिरजू महाराज ने गाया भी, साथ ही इसका नृत्य निर्देषन भी किया। इस ठुमरी का संगीत इस फिल्म के निर्देषक सत्यजीत रे ने दिया है। चित्रपट में बिंदादीन महाराज की इस ठुमरी को नवाब वाज़िद अली शाह के दरबार में कथक नृत्य के साथ प्रस्तुत किया गया। इस चित्रपट में इस ठुमरी को बिरजू महाराज ने केवल भावपूर्ण ढंग से गाया ही नहीं अपितु इस पर दरबारी गायक के किरदार का अभिनय भी किया है। प्रसिद्ध कथक नर्तकी एवं बिरजू महाराज की षिष्या शाष्वती सेन ने हाव–भाव द्वारा नपे–तुले अंदाज़ में एक–एक बोल को सौन्दर्यपूर्ण ढंग से साकार किया है। ऐसी ठुमरियों में नृत्य के साथ ठुमरी गायन से श्रव्य एवं दृष्य दोनों की आनन्दानुभूति होती है।

सैंया रूठ गए मैं मनाती रही

उपषास्त्रीय गायन की प्रतिष्ठित गायिका शोभा गुर्टू द्वारा 1978 में चित्रपट 'मैं तुलसी तेरे आँगन की' में प्रस्तुत ठुमरी को गाया गया। राग 'पीलू' में रचित श्रृंगार रस प्रधान इस परम्परागत ठुमरी में श्रृंगार के वियोग पक्ष को रेखांकित किया गया है। नायिका की विरह वेदना को इस ठुमरी द्वारा भली प्रकार से व्यक्त किया गया है। इस ठुमरी का फिल्मांकन मुजरे के रूप में अभिनेत्री आषा पारेख द्वारा आकर्षक नृत्य के साथ किया गया। गायिका शोभा गुर्टू ने अपनी गम्भीर एवं भावपूर्ण गायकी द्वारा इसे अलंकृत किया है और संगीत रसिकों को मंत्रमुग्ध किया है।

रसके भरे तोरे नैन

श्रृंगार रस प्रधान एवं प्रेम भावना से ओत प्रोत यह ठुमरी राग भैरवी की एक प्रसिद्ध परम्परागत ठुमरी है जिसका गायन गौहर जान, गिरिजा देवी, उ0 बरकत अली खाँ, पं0

भीमसेन जोषी, सिद्धेष्वरी देवी, बेगम अख्तर, इत्यादि जैसे शास्त्रीय संगीत के विख्यात गायक–गायिकाओं द्वारा किया गया है। बोल बनाव की इस ठुमरी की लय विलम्बित होने के कारण भावों की अभिव्यक्ति के लिए इसमें इत्मीनान व चैनदारी मिल जाती है। गायन के बीच–बीच में अकस्मात् परिवर्तन करते हुए छोटी–छोटी बोलतानों का अनुष्ठान करके इसे और भी लुभावना बनाया जाता है। इन्हीं सभी विषेषताओं से सम्पन्न इस ठुमरी को चित्रपट 'गमन' 1978 में शास्त्रीय गायिका हीरा देवी ने भावपूर्ण आवाज़ में गाया। हालांकि इस ठुमरी का प्रयोग इस चित्रपट में पृष्ठभूमि में किया गया, परन्तु चित्रपट में स्थिति के अनुकूल दृष्य को प्रभावपूर्ण बनाने में इस ठुमरी की भूमिका महत्वूपर्ण प्रतीत होती है।

काहे उजाड़ी मोरी नींद

उ0 राषिद अली द्वारा राग सोहनी में रचित यह ठुमरी चित्रपट 'किसना' 2005 में परम्परागत ढंग से मध्य लय में गाई गई। पाष्चात्य वाद्यों के द्वारा इस ठुमरी को नवीनीकरण प्रदान किया गया है। बेहतर साऊंड क्वालिटी एवं इफैक्ट्स से इसे और आकर्षक बनाया गया है जो कि सुनने में बेहद मधुर लगती है। उ0 राषिद अली ने इसे बेहद भावपूर्ण ढंग से अपनी मधुर आवाज में परम्परागत एवं शास्त्रीय रूप में ही प्रस्तुत किया है।

मोरे कान्हा जो आए पलट के

यह ठुमरी चित्रपट सरदारी बेगम (1996) में प्रयुक्त की गई है जो कि पूर्णरूपेण उपषास्त्रीय संगीत पर आधारित है। इसमें इसकी नायिका जो कि उपषास्त्रीय गायिका है, उसके जीवन के संघर्ष की कहानी को प्रस्तुत किया गया है और इसके लिए गीतों को उपषास्त्रीय संगीत के आधार पर रचा गया। इसलिए इसमें गज़ल, ठुमरी, दादरा इत्यादि उपषास्त्रीय गायन विधाओं का स्वतंत्र रूप से प्रयोग किया गया है। इसके गीतों को शास्त्रीय एवं पार्ष्व गायिकाओं ने अपने स्वरों से सजाया है। 'मोरे कान्हा जो आए पलट के' द्रुत लय की खूबसूरत ठुमरी को आषा भोंसले ने बड़े मोहक अंदाज़ में मुर्कियों, कण, खटकों के प्रयोग करते हुए अलंकृत करते हुए गाया है। शास्त्रीय गायिका शोभा जोषी द्वारा मध्य लय में परम्परागत ढंग से गाई ठुमरी 'साँवरिया देख ज़रा इस ओर' बेहद भावपूर्ण ढंग से गाई गई है। इसमें अलापचारी का सुन्दर प्रयोग है। इस में अभिनेत्री ने ठुमरी गाते हुए 'बैठकी' अंदाज़ में हस्त मुद्राओं द्वारा भावाभिनय प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त 'चली पी के नगर' एवं 'घर नाहि हमरे श्याम' शास्त्रीय गायिका आरती द्वारा भावपूर्ण ढंग से गाई नंद राग में श्रृंगार परक ठुमरी है। इन्हीं के द्वारा 'राह में बिछी है पलके आओ' दादरा ताल में निबद्ध एक मधुर ठुमरी को भी इस चित्रपट में शामिल किया गया है।

मोरी अखियाँ ढूँढ रही

यह ठुमरी चित्रपट यात्रा (2006) में प्रयोग की गई। आगरा घराने की शुभ्रा गुहा, जो कि सुनील बोस की षिष्या है, ने तीन ठुमरियां इस चित्रपट के लिए गाई। पहली ठुमरी 'मोरी अखियाँ ढूँढ रही' राग पीलू में और बाकी की दो 'डरे जा डरे जा डरे जा' एवं 'जाओ जी करो न झूठी बतियाँ' मिश्र खमाज में गाई। ठुमरी 'डरे जा डरे जा' को नृत्य भावाभिनय के साथ अभिनेत्री रेखा द्वारा प्रस्तुत किया गया है। 'जाओ जी करो न झूठी बतियाँ' नृत्य भाव की ठुमरी को अभिनेत्री रेखा द्वारा सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया गया है। इस ठुमरी में छोटी–छोटी सरगमों एवं कथक नृत्य के बोलों का प्रयोग कर शुभ्रा गुहा एवं अदिती भट्टाचार्य ने सौन्दर्यपूर्ण ढंग से गाया है। इसी चित्रपट की विलम्बित लय में बोल बनाव की ठुमरी 'मोरी अखियाँ ढूँढ रही' में ठुमरी के रस भाव को अभिनेत्री ने 'बैठकी' अंदाज़ से नृत्य मुद्राओं द्वारा प्रस्तुत किया है। साथ ही ठुमरी में लग्गी का काम भी दिखाया गया है। इस चित्रपट में परम्परागत ठुमरी 'अकेली मत जइयो राधे जमुना के तीर' का आंषिक रूप में पृष्ठभूमि में प्रयोग किया गया।

चित्रपटों में पृष्ठभूमि में प्रयुक्त की गई ठुमरियाँ

'पाकीज़ा'– चित्रपट में पृष्ठभूमि में कई परम्परागत ठुमरियों के इस्तेमाल द्वारा तवायफों के कोठे के दृष्यों को सफलतापूर्वक फिल्माया गया। इनमें से पार्ष्व गायिका राजकुमारी द्वारा गाई दो ठुमरियों 'नजरिया की मारी मरी मोरी गुइया' एवं 'अब की ना जाओ बिदेस' तथा वाणी जयराम द्वारा गाई 'मोरा साजन सौतन घर जाए' तथा शोभा गुर्टू द्वारा गाई 'बंधन बांधी' का प्रयोग किया गया है।

शतरंज के खिलाड़ी – 1977 में आई इस फिल्म के लिए 5 गीतों की रचना की गई थी। परन्तु चार ही गीतों को इसमें शामिल किया गया। वे चारों ठुमरी गीत थे, जिनमें से दो ठुमरियों को आंषिक रूप में इस्तेमाल किया गया और एक को अभिनेता अमजद खान ने गाया जिसकी सिर्फ चार पंक्तियां ही इस्तेमाल की गई। आंषिक रूप से प्रयोग की गई दो ठुमरियाँ 'बजाए बाँसुरिया श्याम' एवं 'छवि दिखलाजा' है, जो कि राग मिश्र खमाज में रचित है तथा शास्त्रीय गायिका रेबा मुहरा द्वारा गाई गई हैं। दोनों ही ठुमरियों का पृष्ठभूमि में प्रयोग किया गया है।

इस प्रकार से अनेकों परम्परागत ठुमरियों का चित्रपट संगीत में सफलतापूर्वक प्रयोग किया गया है। अतः चित्रपट के माध्यम से ठुमरी गायन को जनसाधारण में प्रचलित भी किया गया है। उपरोक्त वर्णित ठुमरियों के अतिरिक्त ऐसी अनेकों ठुमरियां हैं जिनका प्रयोग चित्रपट में शुद्ध रूप से तो नहीं किया गया, परन्तु इनको आधार बनाकर असंख्य चित्रपट गीतों की रचना की गई, जो कि काफी लोकप्रिय भी हुए।

उपसंहार

ठुमरी गायन जो पहले दर्षकों के एक विशिष्ट वर्ग तक ही सीमित था तथा जो केवल संगीत समारोहों एवं महफिलों में ही सुना जा सकता था; हमारे हिन्दी सिनेमा ने उसे सर्व सुलभ बनाकर जनसाधारण में लोकप्रिय बनाने का सराहनीय कार्य किया है। हिन्दी संगीत निर्देषकों ने जब भी कहानी में उचित परिस्थिति प्राप्त की तो वहाँ या तो परम्परागत ठुमरी का प्रयोग किया या ठुमरी गीत की रचना की। अगर हम चित्रपट गीतों को संग्रहित करें तो ठुमरी की एक समृद्ध विरासत उपलब्ध होगी। यही नहीं, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत के प्रतिभावान एवं प्रतिष्ठित कलाकारों की प्रतिभा का भी कई बार हिन्दी फिल्मों में संगीत निर्देषकों द्वारा इस्तेमाल कर चित्रपट संगीत में किया गया है। ठुमरियों के आधार पर जितने भी फिल्मी गीत रचे गए वे श्रुतिप्रिय होने के कारण संगीत रसिकों को ही नहीं अपितु

जनसाधारण को भी आनन्दविभोर कर रहे हैं। यही नहीं हमारे युवा संगीत जिज्ञासुओं को भी इन गीतों से ठुमरियों की परम्परागत बन्दिषों से परिचित होने का सुअवसर प्राप्त होता है। इस प्रकार चित्रपट के माध्यम से ये ठुमरियां युवा पीढ़ी को हिन्दुस्तानी संगीत के साथ जुड़े रहने के लिए भी प्रेरित करती रहेंगी।

संदर्भ

1. बृहस्पति आचार्य (2012), ठुमरी में सनातन सांगीतिक तत्व, निबंध संगीत, चतुर्थ संस्करण, पृ. 11
2. विमल डॉ. (2010),हिन्दी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास, प्रथम संस्करण, संजय प्रकाशन, दिल्ली, पृ.155
3. विमल डॉ. (2010), हिन्दी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास, प्रथम संस्करण, संजय प्रकाशन, दिल्ली, पृ.158
4. बृहस्पति आचार्य (2012), ठुमरी में सनातन सांगीतिक तत्व, निबंध संगीत, चतुर्थ संस्करण, पृ. 11
5. जौहरी डॉ. सीमा (2001), सांगीतिक निबंधमाला, प्रथम संस्करण, पीयूष प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 58
6. विमल डॉ. (2010), हिन्दी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास, प्रथम संस्करण, संजय प्रकाशन, दिल्ली, पृ.158
7. शुक्ल डॉ. शत्रुघ्न (1983), ठुमरी की उत्पत्ति, विकास और शैलियाँ, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय, दिल्ली विश्वविद्यालय प्रथम संस्करण, पृ. 213
8. शुक्ल डॉ. शत्रुघ्न, ठुमरी की उत्पत्ति, विकास और शैलियाँ, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय, दिल्ली विश्वविद्यालय प्रथम संस्करण (1983), पृ. 221